कृषि अन्वेषिका

ANVESHIKA
PUBLISHING & INFORMATICS

POPULAR ARTICLE

मटर की उन्नतशील खेती

✍ **सर्वेश कुमार** * नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या।

✍ **नीरज पाल** - इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

✍ **दीपक कुमार गौतम** - नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या।

Article History:

Received: 12-02-2024

Accepted: 17-03-2024

कुंजी शब्द :

फसल

मटर

उन्नतशील

जलवायु

उपज

अनुरूपी लेखक :

सर्वेश कुमार

नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या।

Image source :- https://www.healthyfood.com/healthy-shopping/in-season-early-summer-peas/

परिचय

दाल एवं सब्जी के लिए मटर की खेती सम्पूर्ण विश्व में कुछ न कुछ की जाती है। मटर भारत की महत्वपूर्ण दलहनी फसल है जिसकी यहाँ दो प्रमुख किस्मों की खेती की जाती है। दानें वाली मटर (Field Pea) और (Gargen Pea) मटर का उपयोग मृदा की कटाव की रोकथाम उर्वरता वर्धक फसल के साथ–साथ हरी खाद के लिए किया जाता है। मटर अत्यधिक पौश्टिक होती है। जिसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, तथा खनिज लवण पाये जाते हैं। विश्व में मटर की खेती रूस, भारत, अमेरिका, जर्मनी, स्पेन, कनाडा, फ्रांस, चीन आदि देशों में लगभग 10.5 मिलियन हैक्टेयर क्षेत्रफल पर की जाती है। क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृश्टि से विश्व में भारत तीसरा प्रमुख उत्पादक देश है। भारत में कुल लगभग 0.45 मिलियन हैक्टेयर क्षेत्र पर मटर की खेती की जाती है। यहाँ मटर का कुल उत्पादन लगभग 0.4 मिलियन टन होती है। जो सम्पूर्ण दलहनों का लगभग 0.3% है।

जलवायुः- मटर की फसल के लिए शुष्क एवं ठण्डी जलवायु की आवश्यकता होती है। मटर के बीज के अंकुरण के लिए 22°C तापमान उचित रहता है। पौधों के उचित विकास एवं अच्छी पैदावार के लिए औसत मासिक तापमान 13°C- 18°C होना चाहिए।

भूमिः- मटर की खेती बलुई दोमट से लेकर मटियार भूमि में की जा सकती है लेकिन अच्छी जल निकास वाली दोमट भूमि जिसका P.H. मान 6-7.5 के बीच हो मटर की खेती के लिए सर्वोत्तम रहती है

खाद एवं उर्वरकः- मटर दलहनी फसल होने के कारण आवश्यक नाइट्रोजन की पूर्ति राइजोवियम जीवाणु कर देते हैं, यदि उपलब्ध हो सके तो 200 क्विंटल गोबर की सड़ी खाद प्रति हैक्टेयर की दर से अच्छी प्रकार मिला देनी चाहिए। इसके अतिरिक्त 20-30 किग्रा0 नाइट्रोजन 50-70 किग्रा0 फास्फोरस तथा 40-50 किग्रा0 पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से उर्वरक के रूप में देनी चाहिए।।

बीज का उपचारः- मटर में बीज एवं जड़ गलन रोग न लगने पाये इसके लिए बीज को बोने से पहले किसी फफूंदनाशक दवा जैसे कैप्टान एवं थायराम से 2.5 ग्राम रसायन प्रति किग्रा0 बीज के दर से अवश्य उपचारित कर लेना चाहिए।

बुवाई का समयः- मटर की बुवाई मध्य अक्टूबर से नवम्बर तक की जाती है, जो खरीफ की फसल की कटाई पर निर्भर करती है। फिर भी बुवाई का उपयुक्त समय अक्टूबर के आखिरी सप्ताह से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक का होता है।

बीज की मात्राः- अगेती किस्मों के लिए 100 किग्रा0/हैक्टेयर तथा मध्यम व पछेती किस्मों के लिए 80 किग्रा0/हैक्टेयर बीज की मात्रा उचित होती है।

सब्जी वाली मटर की उन्नत जातियाँः-

1- आर्केलः- यह पककर जल्दी तैयार हो जाती है। इसकी फलियाँ 60-70 दिन में तोड़ने योग्य हो जाती हैं। इसकी फलियाँ 8-10 सेमी0 लम्बी एवं 5-6 दानें वाली होती हैं।

2- टाइप 56ः- यह मध्यम अवधि वाली जाति है। इसकी फलियाँ 75-80 दिन में तोड़ने योग्य हो जाती हैं।

3- टाइप 19ः- यह 80-85 दिन में फलियाँ तोड़ने योग्य हो जाती है।

4- बोनविलेः- यह मटर की अमेरिकन जाति है। इसकी फलियाँ 85 दिन में तोड़ने योग्य हो जाती हैं। इसमें फूल की शाखा पर दो फलियाँ लगती हैं।

5- अलीबैजरः- इसकी फलियाँ 65-70 दिनों में तोड़ने योग्य हो जाती हैं।

दाल वाली मटर की उन्नत जातियाँः-

1- रचनाः- यह प्रजाति चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा विकसित की गयी है। इसकी फसल 130 दिन में पककर तैयार हो जाती है।

2- हंसः- यह 115-120 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इसके दाने सफेद रंग के होते हैं।

3- स्वर्ण रेखाः- यह प्रजाति 120-125 दिन में पककर तैयार हो जाती है।

सिचाईः- मटर की फसल को ज्यादा पानी की जरूरत नहीं पड़ती है यदि मटर की बुवाई उचित नमी में की गयी हो तो। पहली सिंचाई मटर में फूल निकलते समय कर देनी चाहिए।

खरपतवार नियन्त्रणः- बुवाई के समय खरपतवार का रासायनिक विधि द्वारा नियन्त्रण करना चाहिए। इसके लिए पेन्डीमेंथीलीन 30EC की 3-3 लीटर मात्रा 600-800 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के 2 दिन वाद प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

रोग एवं रोग नियन्त्रणः-

1- चूर्णिट आसिटाः- यह एक बीज जनित बीमारी है। इस बीमारी में पत्तियों पर हल्के निशान बन जाते हैं, जो सफेद पाउडर के रूप में पत्तियों को ढक देता है। इसकी रोकथाम के लिए 2-3 किग्रा0 गन्धक का चूर्ण 600-800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

2- रस्टः- यह रोग फफूँद द्वारा फैलता है। यह नम स्थानों पर ज्यादा फैलता है। इसके उपचार के लिए पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए या हेक्साकोनाजोल की 1 मिली लीटर मात्रा 3 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

3- वैक्टिरियल ब्लाइट:- यह एक बीज जनित बीमारी है। इसके बचाव के लिए रोग रहित बीज का प्रयोग करें तथा फसल प्रभावित होने पर स्ट्रेप्टोसाइक्लिन का छिड़काव करें।

4- उकठा:- यह फफूँद से होने वाली बीमारी है। इसके बचाव के लिए बीच के बुवाई से पहले 2-5 ग्राम कार्बेडाजिम से प्रति किलोग्राम की दर से उपचारित करें।

कीट एवं कीट नियन्त्रण:-

1- फली छेदक:- सूडियां हरे रंग की होती हैं जो फलियों में छेद करके अन्दर घुस जाती है और दाने को खा जाती है। इसके नियन्त्रण के लिए 2 किग्रा0 मैलाथियान (50% घुलनशील) या 1.5 लीटर फेनवेलरेट 20 EC की 1 लीटर मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

2- तना वेधक:- यह काले रंग की मक्खी होती है। इसकी सूडियां प्रारम्भ में फसल के तने में छेद कर अन्दर से खा जाती है। इसके नियन्त्रण के लिए डाइमेथोएट 30 EC की 1 लीटर मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

3- पत्ती में सुरंग बनाने वाले कीट:- इस कीट की सूडियां पत्तियों में सुरंग बनाकर हरा पदार्थ खाती है। जिसके कारण पत्तियों में सफेद आकार की टेढ़ी-मेढ़ी लाइनें सी बन जाती हैं। इसके नियन्त्रण के लिए 1 लीटर मेटासिटाक्स 25 EC को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

उपज:- उन्नत विधि से मटर की खेती करने पर उन्नत किस्मों से लगभग 20-25 क्विंटल दानें की उपज प्रति हैक्टेयर मिल जाती है।